सहलेखिका

जर्मनी मे बर्लिन से सटा और इसको तीन दिशाओं से घेरे इनका एक और प्रदेश है ब्रान्डेनबुर्ग।इस प्रदेश मे एक बेहद छोटा सा गॉव टेल्स है।इस गॉव से लगा एक अपेक्षाकृत बड़ा सा कस्वा है क्योरित्स।यातायात के नाम पर क्योरित्स ने ही समीपवर्त्ती गॉवो को बर्लिन से जोड़ रखा है।बर्लिन से टेल्स की दूरी यही कोई डेढ सौ किलोमीटर है।पूर्वी जर्मनी रिजिम मे इस गॉव मे एक बहुत बड़ा सरकारी कालखोज हुआ करता था।सभी के पास रोजगार होता था।सन उन्यासी मे जब पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी का एकीकरण हुआ.तब यहॉ का कालखोज बन्द करके किसानों को उनकी जमीने वापस कर दी गई।चूँकि यहॉ के किसानों के पास वो तकनीकी न थी.जो पश्चिमी जर्मनी के किसानो के पास थी.लिहाजा वो प्रतियोगिता मे लड़खड़ा गये।खेती बाड़ी छोड़ कर रोजगार की तलाश मे बड़े शहरों की तरफ भागने लगे।गॉव उजड़ने लगा।किसानो के कुछ परिवार गॉव मे ही रह गये।वे जौ सरसो और सूर्यमुखी फूलों की खेती करते हैं।उनके पास अपनी गायें भी है.जिनके दूध पानी के भाव मे क्योरित्स स्थित एक फर्म खरीद ले जाता है और उससे सैकड़ों दूसरे प्रोडक्टस बना कर चौगूनी कीमतों पर बेचता है।किसी तरह बस इन किसान परिवारों का गुजारा हो रहा है।एकाध घर रिटायर्ड परिवारों के हैं।बाकी घर बर्लिन के कुछ समर्थ परिवारों ने खरीद रखा है।वो वहॉ अपना वीकएन्ड गुजारने जाते हैं।इस गॉव मे एक पुराना सा चर्च भी है.जो न जाने कितने वर्षो से बन्द पड़ा है।थोड़ा आगे जाते ही एक बड़ा सा नाला है.जिसमे बड़ा साफ पानी बहता है।पास ही लकड़ियो का बना एक विशाल घर है टेल्सहाऊस।इस हाऊस मे यहॉ के लोग समवेत अपने एकाध पर्व.जन्मदिन या फिर कन्फर्फेशन.कम्यूनिओन जैसे अवसरों पर जमा होते हैं.समवेत ग्रिल करते है और फिर बेहिसाब दारू पी कर नाचते हैं।बर्लिन की आबादी खत्म होते ही हाईवे के दोनो तरफ या तो चीड़ के जन्गल नजर आते हैं या फिर दूर दराज तक फैले समतल या असमतल खेत।जब तब छोटे मोटे गॉव.यदा कदा बाड़ो मे घास चरते घोड़े या पोनीस.बड़ी बड़ी थनों वाली गायें या फिर सैकड़ों की तायदाद मे भेंड़।बिजली के तारों पर कतारों मे स्पात्स नाम के पक्षी हजारों की संख्या मे बैठे दिख जाते हैं।एक असीम शान्ति चारों ओर छाई रहती है।

इस गॉव मे एक हैलोवीन नामका पर्व भी बड़े धूमधाम से मनाया जाता है.गोकि हैलोवीन इनका अपना पर्व नही है।जर्मनी मे ये कोला या हैमबुर्गर जैसी वाहियात चीजों की तरह अमेरिका से आया हुआ है और धीरे धीरे यहॉ काफी लोकप्रिय होता जा रहा है।न जाने क्यों इस उत्सव से कोंहड़ा इतनी बुरी तरह जुड़ा हुआ है।खाने के नाम पर इस दिन कोंहड़े की सूप हर जगह देखने को मिल जाती है।यही नही इसे खोखला करके इनमे नाक कान और ऑखें जैसी चीजें बना दी जाती है.फिर इनमे या तो मोमबत्ती गाड़ दी जाती है या फिर बिजली के लट्टू फीट कर दिये जाते हैं।लोग बाग अपने चेहरों पर भूत प्रेतों का नकाब पहन लेते है और हू हा करके एक दूसरे को डराते हैं।छोटे बच्चे घर घर जा कर दरवाजे खटखटाते हैं और उनसे चॉक्लेटस वगैरह मॉगते हैं।हमारी तरह जर्मनी मे उतने त्यौहार पर्व नही है।एकाध पर्वो के अलावे इनके दूसरे पर्व इनकी अर्थव्यवस्था से ही जुड़े दिखते हैं और अमेरिका से आयातित होते हैं।

इस गॉव मे मेरे एक दोस्त ने भी एक मकान कई एक्कड़ जमीनों समेत खरीद रखा है।अपना वीकएन्ड वो वहीं अपने परिवार के सन्ग गुजारता है।पिछले वीकएन्ड मे उसी के न्यौते पर मै इस गॉव हैलोवीन के अवसर पर गया था।नकाब वगैरह तो मैने नही खरीदा था.पर दोनो गालों पर काले रंग से मकड़े की जाली बना रखी थी।टेल्स हाऊस मे नही भी तो सौ डेढ सौ लोग रहे ही होगे।मुझे तो मेरे दोस्त ने पहचान लिया.पर मै उसे नही।सभी नकाबों मे थे।

मेरे दोस्त के कई परिचित परिवार भी बर्लिन से वहॉ आये हुए थे।जब तब वो किसी को पकड़ कर ले आता था और उनका मुझसे परिचय करवा जाता था।ये शाम पीने और पिलाने की शाम थी।पूरे होश मे वहॉ शायद ही कोई रहा होगा।शायद यही बजह रही होगी कि इरीना मुझे नही पहचान पाई।मुझे उसे पहचानने मे एक पल भी नही लगा।परिचय के बाद वो दूसरे लोगों मे व्यस्त हो गई.पर मेरा मन उसी के इर्द गिर्द भटकता रहा।उससे मिलने की स्तब्धता मुझे बॉधे रही।अब वो एक जर्मन डेंटिस्ट की व्याहता और एक बेटे की मॉ भी थी।इस शाम इनसे भी मेरा परिचय हुआ।

मेरे लिए ये अविश्वसनीय था.पर संयोग को कौन जान पाया है।इरीना से फिर दुबारा मेरी मुलाकात होगी.और वो भी इतने वर्षो के बाद इस छोटे से गॉव मे!ये मै सपने मे भी नही सोचा था।

खाने की मेज पर वो दूसर छोर पर बैठी हुई थी।रसियन एक्सेन्ट के साथ उसका जर्मन बोला जाना मै साफ साफ सुने जा रहा था।जहॉ वो अॅटकती थी.वहॉ बेखटके रसियन भी इस्तेमाल कर लेती थी।अपने पति के ही बारे मे वो सबको कुछ सुनाये जा रही थी।रह रह कर उसके लगाये ठहाके हवा मे गॅूज जाते थे।एक ढेर सा अन्तर उसमे आ गया था।दूबली पतली तो वो अभीं भी थी.पर वो बेहद उन्मुक्त हो चली थी।अकेली न जाने कितने लोगों को हॅसाये जा रही थी!एक पावर वाला चश्मा वो उन दिनो भी पहना करती थी.पर इतने बड़े फ्रेम का नही.जो वो आज पहने हुई थी।गाढे नीले रंग की जीन्स और इसी रंग की चारखानेदार कमीज.जिसकी बॉहें वो लापरवाही से ऊपर तक चढा रखी थी।उतनी ही लापरवाही से वो उसके ऊपरी दो बटने भी खोल रखी थी।आज भी वो जूड़े मे ही थी।आज से पच्चीस वर्ष पहले सुन्दरता या आकर्षण के नाम पर उसके पास उसकी कद.हरी ऑखे या फिर ये जूड़ा हुआ करता था।एक बार कहने पर उसने अपने जूड़े के क्लिप्स हटाये थे।सन की तरह सूनहरे बाल लहरा कर उसकी पीठ पर जा फैले थे।इन तीन चीजों के अलावे उसके पास एक चौथी चीज भी थीःउसकी मखमली आवाज.जो आज भी उसके पास थी।

कई प्रश्न एक साथ मेरा मन मथे जा रहे थे।मास्को वापस लौटने के बाद क्या वो आलवीना से मिली!आलवीना से क्या आज भी उसके सम्बन्ध हैं!उसने अपनी पढाई पूरी की या नही!अपने पति से वो कब और कैसे मिली!बर्लिन वो कब आई!बर्लिन मे वो क्या कर रही है!

इन सारी बातों को जानने की उत्सुकता यकायक प्रबल होने को आई थी।मुझे अपने मन का ढीढपन समझ मे नही आ रहा था।उसे

अपना पता देना मैने जरूरी नही समझा था. फिर दिल्ली मे मेरे पास कोई स्थाई पता भी तो नही था. पर वो अपने सारे पते मुझे लिखवा गई थी। सैकड़ों बार उसने मुझसे कहा थाः अपना हालचाल मुझे देते रहना. जो मैने नही किया। अब जब वो सामने आ गई है .तब मै उसके बारे मे सब कुछ जानना चाहता हूँ।

यादों के पंक्षी बड़ी तेज रफ्तार से उड़ा करते है। देखते ही देखते वो अतीत के हर मूंडेरों पर जा बैठते हैं।

मै जे एन यू के लोअर कैम्पस मे इसके इन्टरनेशनल गर्ल्स हॉस्टल के सामने वाले लॉन मे बैठा निम्बू पानी पी रहा था कि अचानक मेरी नज़र इन्टरनेशनल गर्ल्स हॉस्टल के कॉमन रूम मे बैठी एक लड़की पर पड़ी. जो खिड़की की तरफ अपनी कुर्सी किये पता नही कौन सी किताब पढ़े जा रही थी! रह रह कर मेरी नज़र उस पर जा अॅटकती थी। कुछ मिनट ही गूजरे होंगे कि वो उठी और सामने वाले दरवाजे से बाहर आती दिखी। एक साथ लॉन मे बैठे सैकड़ों लोगों की नजरे उस पर जा जमीं। एक दूबली पतली लम्बी गोरी लड़की लहराती ढाबे की ओर बढी। उसने एक सफेद रंग का ब्लाउज पहन रखा था। उसका जालीदार स्कर्ट उसके पैरों तक आता था। उसने अपने बालों का जूड़ा बना रखा था। ढाबे से उसने भी निम्बू पानी का ग्लास खरीदा. पर वो लॉन मे नही रूकी. बल्कि दुबारा कॉमनरूम मे वापस जा लौटी। अपनी अधखुली किताब अपनी कुर्सी से हटा कर फिर उस पर जा बैठी। शाम होते ही इस लॉन मे सैकड़ों का मजमा सा लग जाता था। पता नही ऐसा कौन सा आकर्षण था इस लॉन मे! इस लॉन को घेरे जे एन यू के गन्गा और यमुना हॉस्टल्स थे. जिनके कमरों मे जलते लट्टूओं का प्रकाश इस लॉन पर पड़ता था। करीने से कटे घास. लॉन मे बिखरी छोटी बड़ी शिलायें. लड़के लड़कियाँ आँखों मे आँखें डाले युगल जोड़ियॉ. सामने वाले इन्टरनेशनल गर्ल्स हॉस्टल के कॉमनरूम मे बाहर के देशों से आई लड़कियाँ. ऊपर से ये ढाबा. जो गई सुबह तक अपना निम्बू पानी सोने के भाव मे बेचा करता था। इस लॉन से सटा ही यूनिवर्सिटी के सिक्यूरिटी डिपार्टमेन्ट का दफ्तर था. जिसके दो चार सिपाही अक्सर इस लॉन मे टहलते देखे जाते थे। भींड़ भाड़ होने की वजह से जे एन यू की पथरीली कैम्पस मे बसे सॉप और बिच्छू भी इस तरफ का रूख करने से घबराते थे।

देखते ही देखते दस बजने को आये थे। ढाबे वाले को अपना खाली ग्लास थमा कर मै अपर कैम्पस की ओर बढा। इस कैम्पस को लोअर कैम्पस से एक चारकोल की पक्की सर्पीली सड़क जोड़ा करती है. जिसके दोनो ओर सिमेन्ट के बने पोस्ट से लटके नक्काशीदार लैम्प्स अपनी रोशनियॉ बिखेरते रहते हैं। एक दूसरा रास्ता इन्टरनेशनल गर्ल्स हॉस्टल के सामने से गुजरता हुआ विरान से मैदान के पगडंन्डियों मे खो जाता है। इस विरान मैदान मे एक अन्धा कुँआ भी है. जिसमे अब तक जे एन यू के तीन स्टूडेन्टस कूद कर अपनी जानें दे चुके थे। यूनियन पब्लिक सर्विस के इम्तहानो मे तीसरी बार भी वो सफल नही हो पाये थे। अन्धेरा हुआ नही कि वो अपनी मॉओं को सम्बोधित करके जोर जोर से रोने लग पड़ते हैं। आस पड़ोस मे बसे सॉप और बिच्छू हल्की आहट पर भी जग कर अपने नथूने पटकने लगते हैं। यहॉ की एकाध जंगली जड़ी बूटियॉ भी जहरीली बताई जाती थीं। छूते ही दाद और खूजली का जानलेवा कष्ट्र प्रदान करती हैं।

वो लड़की अभीं भी अपनी किताब मे खोई हुई थी। एक सरसरी नज़र उस पर डाल कर मै आगे बढ गया।

अपनी बालकोनी मे कवि पहले से ही एक कम्बल को दुहरा करके मेरा बिस्तर लगा चुका था। बिना कपड़े बदले मै बिस्तर पर जा गिरा। आठ भी नही बजे होते थे कि आलवीना एक सोफे को खींच कर मेरा बिस्तर लगा दिया करती थी। तकिये को पीट पीट कर वो इतना आरामदेह बना देती थी कि उस पर सर रखते ही मेरी ऑखें मूँदने लगती थी। जब वो मेरी पेशानी चूमने के लिए मुझ पर झुकती थी. तब सारा आसमान अपने चॉद सितारों के साथ सरक कर मुझ पर पसर जाता था।

आवेश मे आ कर मैने मास्को छोड़ तो दिया था. जिसका थोड़ा बहुत पश्चताप मुझे अब हो रहा था। आठ वर्षो की तपस्या से अर्जित डिपलोम की अपने देश मे कोई इज्जत नही थी। संघर्षो का एक अध्याय. जो लगभग समाप्ति पर आ चुका था. फिर से एक बार खुल चुका था।

देखते ही देखते मै अट्ठाईस वर्ष का हो चला था। उपलब्धियों के नाम पर मेरे पास मास्को के लोमोनोसोव यूनिवर्सिटी का एक डिपलोम था और आलवीना का प्यार। आलवीना के प्यार ने मुझे मास्को के अन्तिम वर्ष मे तोड़ा और लोमोनोसोव का डिपलोम मुझे अपने देश मे तोड़े जा रहा था।

धनबाद मे तकरीबन रोज ही कोई न कोई मेरे विवाह के लिए हमारे घर आ धमकता था। दो चार ढंग के कपड़े. जो मेरे लिए सिलवाये गए थे. इन्ही मेहमानों की अगवानी मे पहनने पड़ते थे। न चाहते हुए भी मुझे उन्हे अपने डिपलोम के बारे मे बताना पड़ जाता था। एकाध फोटोज. जो डाः वागीरोवना ने जर्बदस्ती मेरे बैग मे डाल दिये थे. उन्हे मॉ ड्राईन्गरूम के मेज पर पसार देती थी। ःविदेश की पढाई है। कोई मजाल नही हैः

ःमेरे कानो मे मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन के एक क्लर्क का कहाःकोई तोप मार कर नही आये हैं आप कि हम आप को देखते ही हिन्दुस्तान का प्राइम मिनिस्टर बना दें ःमेरे कानो मे अहर्निश पिघले सीसे की नाई रिसता रहता था।

कई तो मास्को का नाम ही सुन कर मुँह बिचकाने लगते थे। अपना देश जाग चुका था। लोगों को विदेश का मतलब समझ मे आ चुका था। साम्यवादी और पुंजीवादी देशों मे क्या अन्तर है. ये वो जान चुके थे। हवाई जहाज मे बैठकर हर इन्सान विदेश नही जाता है। कई तो विदेश के नाम पर ऐसे देशों मे भी चले जाते है. जहॉ भूख और बेहाली हमारे अपने देश से भी बढ कर है।

मॉ को मै समझा समझा कर हार गया था। उनके पल्ले कोई बात ही नही पड़ती थी। जब तब उनके चेहरे पर छाई उदासी को देख कर मै बड़ा उदास हो जाता था। बिस्तर पर पड़ते ही मै एक अन्धे कुँए मे जा गिरता था। बड़ी मुश्किल से मै अपने आप को रोज ही खींच कर दुबारा भूमि पर ले आता था। पिताजी भी काफी अनमयस्क से हो चले थे।

धनबाद मे मेरा और लम्बा रहना लगभग दूभर सा हो चला था। एक दिन मैने अपना बोरिया बिस्तर सम्हाला और दिल्ली की ट्रेन पकड़ी। मेरे जीवन मे न जाने कितनी बार मेरे भाग्य ने मेरे पैरों के तले की जमीन को एक चट्टाई की तरह परे खींच लिया था! आज भी वो ठीक यही कर रहा था।

कवि से मेरा परिचय ट्रेन मे ही हुआ था।वो बक्सर का रहने वाला था और मेरे एक ममेरे भाई को जानता था।उसके सगे चाचा बक्सर क्षेत्र से एम एल ए थे।उन्ही के कहने पर कवि ने दिल्ली के जवाहर लाल यूनिवर्सिटी मे चायनीज भाषा मे एडमिशन ले रखा था,ताकि उसे रहने के लिए यहाँ के हॉस्टलों मे कमरा मिल सके।वो यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन के इम्तिहानो की तैयारी कर रहा था।उसे अपर जेएनयू मे बने न्यू हॉस्टल मे एक कमरा मिला हुआ था।उसके दिल्ली मे रहने का खर्चा उसके चाचा ही उठा रहे थे।
उसका पूरा नाम रमाकान्त तिवारी था।कवि उसका उपनाम था।वो कवितायें तो नही लिखता था,पर उसकी बातों मे कविताओं जैसी मिठास होती थी।
दिल्ली मे ये मेरी पहली छत थी।सुबह नहाने धोने के बाद रोज ही कवि एक कप मे सत्तू घोल कर मुझे पीने के लिए पकड़ा देता था।इस घोल को वो उष्मनाशक कहा करता था।सत्तू के अलावे भिंगोये चने या घर से लाये भूने चने या लाई वगैरह से हम सुबह का नाश्ता करते थे।इसके बाद हम जाके लाइब्रेरी मे बैठ जाते थे।गर्मियों के दिन चल रहे थे।सुबह के नौ भी नही बजे होते थे और हमारा कमरा भट्ठी की तरह तपने लगता था।लाइब्रेरी मे कम से कम सिलिंग पंखे तो होते थे।उससे लगी ही जेएनयू की एडमिनिसट्रेटिव बिल्डिन्ग थी,जहाँ एक स्वीमिंगपूल भी बना हुआ था।पानी के नाम पर इसमे एक बून्द तक न था।इतना बड़ा डस्टबीन मैने पहली बार देखा था।पूरे कैम्पस का कचरा वहाँ पड़ा हुआ था।बैठने की सीढियों पर दरारें पडी हुई थीं।इसी बिल्डिन्ग के एक कोने मे मेस हुआ करती थी।बड़े बड़े अल्यूमिनियम की देगचियों मे चावल दाल पकते थे।चिनी प्लेटों मे खाने परोसे जाते थे।दूर दराज तक सफाई का कोई नामोनिशाँ तक न था।फर्शो और दीवारों के मोजाईक घिस के न जाने कबके गायब हो चले थे।पीने के नाम पर चनकी सीसे की ग्लासे थी।मेजो पर स्टील के गन्दे जगों मे लगभग उबला पानी भर दिया जाता था।इस मेस की न तो मेजे ही सलामत थी और न तो बैंचे ही।यू पी और बिहार के आये लड़के रसोईयों और बेयरों की माँ बहन करते रहते थे।दूसरे शब्दों मे जवाहर लाल नेहरू के आधुनिक और अर्न्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप मे उनके देखे सपने मे मोटे चूहों की तरह धमाल करते थे।दोपहर का खाना मै इसी मेस मे खाया करता था।न्यू हॉस्टल के परिशर मे ही एक गुमटी होती थी।शुरू के दिनो मे शायद इसमे गेटकीपर बैठते होंगे।आज के दिनो मे वो दोसे और बड़े की दुकान थी।गुलमोहर के पेंड़ों के नीचे एकाध बैन्चे भी वहाँ लगी दिखती थीं।सड़क की दूसरी तरफ एकाध चाय बिड़ी सिगरेटों की गुमटियाँ और दो ढाबे थे।पौ फटने से पहले ही इनके नौकर सड़क के दोनो ओर लाइन से हग आते थे।आस पड़ोस के मैदानों मे साँप बिच्छूओं के डर से नही जाते थे।
हर महीने शास्त्री भवन मे क्लर्को से मेरी तकझक हुआ करती थी।जब तब मास्को वापस लौट जाने का भी मन करता था।मैने तो वहाँ बस जाने का भी फैसला कर लिया था,पर मेरे भाग्य को ये मंजूर नही था।उसे दुबारा मुझे ला कर हिन्दुस्तान मे पटकना था।अब मेरे पास न तो भाग्य के खिलाफ लड़ने की शक्ति थी और न ही दुबारा अपने भविष्य को सँवारने की।एक टूटी नाव थी और चारो तरफ बस तेज धारे थे।
इन्टरनेशनल गर्ल्स हॉस्टल के कॉमन रूम का अपना ही ठाट था।बड़ी बड़ी खिड़कियाँ,खिड़कियों पर लगे सिल्क के पर्दे,फर्श पर बिछी कॉलीन,सनमाईका की मेजें,आरामदेह कूर्सियाँ,बिलियार्ड और टेबलटेनीश के टेबल्स शतरंज कैरम और न जाने कौन कौन से खेल दसों अर्न्तराष्ट्रीय अखबारें और पत्रिकायें,यहाँ तक कि वहाँ ठंढे पानी का कूलर भी लगा हुआ था।जे एन यू की छात्रवृतियों पर आई बाहर की लड़कियाँ जे एन यू के लड़कों के लिए आकर्षण की पहली केन्द्र थीं।छेड़ छाड़ करने से घबराते थे,पर उन्हे चक्षूचोदन से कौन रोक सकता था!
पिछली बार की तरह आज भी वो लड़की अपनी किताब मे खोई हुई थी।उस पर एक सरसरी नज़र डाल कर मै अपर कैम्पस की ओर बढ चला।बिस्तर पर गिरते ही आलवीना की यादें एक कोहरे की तरह मेरे चारो ओर बिखर जाती थीं।रात भर करवटें बदल बदल कर उसकी यादों को झटकने का निष्फल प्रयास किया करता था।
आज पहली बार उसने अपनी नज़रें उठाई थीं।मुझे ऐसा लग रहा था जैसे उसकी नज़रें मेरा पीछा करते कवि के बालकोनी तक चली आई हों।उसके पास भी आलवीना की तरह ही हरी आँखें और बड़ी बेगमयी भवें थी।
एक बार मै किसी काम से प्रोस्पेक्टमार्क्सा जा रहा था।ठीक मेरे सामने आलवीना अपनी किसी किताब मे खोई दिखी थी।मै उसे निर्निमेष देखे जा रहा था।कभीं उसके चेहरे पर मुस्कान पूत जाती थी,तो कभीं उसकी कमानीदार भवें एक दूसरे से जूट जाती थीं।ठीक किताब की टाइटल पर उसकी गोरी लम्बी उँगलियाँ फैली हुई थीं।सिर्फ एक बार उसने अपनी नजरें उठाई थीं।इसके पहले भी मैने कई हरी आँखें देखी थी,पर इतनी गहरी हरी आँखें पहली बार देख रहा था।रह रह कर उसकी लटें उसकी आँखों पर आ गिरती थीं जिन्हे समेट कर वो अपने कानों मे खोंस देती थी।प्रोसपेक्टमार्क्सा कब का पीछे छूट चुका था।दो चार स्टेशनों के बाद इस दिशा का आखिरी स्टेशन आने वाला था।मै मंत्रमुग्ध आलवीना को निहारे जा रहा था।जब आखिरी स्टेशन प्रिअबराजेनस्कीप्लोसाज आया,तो वो उतरने के लिए उठी।उसके सूनहरे बाल उसके नितम्ब पर जा गिरे।उसके पीछे मै भी जा उतरा।कन्वेयर के खत्म होते ही वो बस स्टॉप की ओर बढी।थोड़ी दूरी रख कर मै वहाँ बने एक रेलिन्ग पर जा बैठा।कुछ ही मिनट गूजरे होंगे कि वो मुझे अपनी ओर आती दिखी।मेरे रीढ की हडी जमने को आई।हड़बड़ा कर रेलिन्ग से जा उतरा और एक अनजान की तरह मेट्रोस्टेशन के इन्ट्रैन्स की ओर बढने को हुआ कि उसने टोकाःतुम्हे मैने कई बार लोमोनोसोव के कैम्पस मे देखा है।वहाँ पढते हो क्या!
मेरी जान मे जान आई।
हकलाते हुए बतायाःहाँ
ःकौन सी फैकल्टी मे!
ःबायोफिजिक्स

ःमै भी वहाँ रसियन फिलोलॉजी पढती हूँ।पहला सिमेस्टर है।तुम कौन से सिमेस्टर मे हो!
ःपॉचवे मे।
ःमेरा नाम आलवीना है।कल लन्च वाले ब्रेक मे हाउस वन के बूफे मे मिलना न!मै वहाँ तुम्हारा इन्तजार करूँगी।भूलना नही।
मै उसे अपना नाम ही बता पाया था कि उसकी बस आ गई।
बाद के दिनो मे उसी ने एक बार बताया था कि उसे मेरे घूरने का एहसास कब का हो चुका था और वो ये सोचे जा रही थी कि इतनी देर से ये लड़का मुझे घूरे जा रहा है.उठ कर पास क्यों नही आता!
ःउठ कर पास क्यों नही आये!डपट कर पूछी
ःकैसे आता!अगर तुम सबके सामने डॉट डपट करने लगती तो!
ःमै डॉट डपट क्यों करती!पास आके तुम मुझसे मेरा परिचय ही मॉगते न!या कुछ और मॉगते!
ःऔर क्या मॉगता!
ःये भी मै ही बताऊँ!मोजना पजनाकोमित्सा कहके तुम विदेशी लोग सीधे लड़कियों को अपने कमरों मे आने का दावत नही देते हो क्या!
ःतुम मेरा नाम उन लफ्नगों के साथ क्यों जोड़ रही हो!
ःफिर पास क्यों नही आये!
ःबात ये है कि इतनी आजादी हमे अपने देश मे नही मिली हुई है।हमारी परवरिश ही दूसरी है।किसी से परिचय मॉगना भी गन्दी हरकतों मे गिना जाता है।देखते ही देखते जनसमुदाय खलनायक बन जाता है और परिचय मॉगने वाला आवारा।
सुन कर आलवीना हॅसने लगी और देर तक हॅसती रही।
आलवीना के संग बिताया एक एक पल मेरे जीवन मे कालजयी बन चुका था और एक जिद्दी नाग की तरह रोज ही मुझे जकड़ कर मुझमे अपना कभीं न खत्म होने वाला जहर उगलने मे लग जाता था।
तकरीबन दस बजे मै जे एन यू का लॉन छोड़ देता था।यही वक्त कवि के भी वापस आने का हुआ करता था।
शायद उस लड़की को भी मेरे वापस लौटने के समय का आभास हो चला था।मै अपना खाली ग्लास काउन्टर पर देने गया नही कि वो अपनी किताब बन्द कर देती थी।फिर उसकी नज़रें जैसे मुझ पर जम सी जाती थीं।
अब तो वो हल्के से मुस्करा कर अपनी दॉई हथेली भी हवा मे लहराने लगी थी।
कुछ ही अरसा गुजरा होगा।एक दिन वो मुझसे ढाबे पर टकरा गई।बिना किसी झिझक के मेरे पास आई और मुझे प्रिवयत कहके अपना नाम हिन्दी मे ही बताया।जब मैने उसे अपना नाम रसियन मे बताया.तब वो चौंकी
ःतुमने रसियन कहाँ सीखी!
ःमास्को मे
ःमास्को मे!वहाँ तुम क्या करने गये थे! अचरज से पूछी
ःपढने।मै समान्य बना रहा
ःकौन सी यूनिवर्सिटी मे!
ःलोमोनोसोव मे
लोमोनोसोव का नाम सुन कर वो इतनी जोर से चिखी कि एक साथ लॉन मे बैठे लड़के लड़कियों की नज़रें हमारी ओर जा उठी।
पानी का ग्लास थामे हम गंगा हॉस्टल के सामने आये।वहाँ एक बैंच खाली थी।हम उस पर जा बैठे।सरक कर इरीना बिल्कुल पास आ गई थी।उसने इस बात पर बिल्कूल ही ध्यान नही दिया कि देखते ही देखते गन्गा और यमुना हॉस्टल्स के उन कमरो की खिड़कियाँ जो हमारी तरफ खुलती थीं.उनकी तख्तों पर न जाने कहाँ कहाँ के लड़के आ बैठे थे।सिटियों का बजना अभीं शुरू नही हुआ था।
हमारे बातचीत का विषय लोमोनोसोव था।इरीना भी इसी यूनिवर्सिटी मे इतिहास पढ रही थी।वो सातवीं सिमेस्टर मे थी और दो सिमेस्टरों की छुट्टी ले कर जे एन यू के ही स्कालरशीप पर हिन्दी सीखने आई हुई थी।दिल्ली मे उसे आये तीन महीने हो चले थे।उसका पूरा नाम इरीना स्मूत्सकाया अन्तोनोवा था।वो रहने वाली तो मास्को की ही थी.पर उसके पिता उन दिनो घना मे एम्बेसडर थे।उसकी मॉ पेशे से जर्नलिस्ट थीं और वो भी घना मे ही थीं।इरीना के दादा दादी और नाना नानी मास्को मे रहते थे.पर वो उनके संग न रह कर हॉस्टल मे रह रही थी।
उसे मुझे अपने बारे मे भी बताना पड़ा.पर मैने उससे आलवीना के बारे मे कुछ भी नही बताया।उसे मैने ये भी नही बताया कि मेरे पास अभीं भी सोवियत यूनियन का तीन वर्षो का वीजा है और डॉक्टरेट करने का ऑफर है।दिल्ली मे मेरी जो फजीहत हो रही है .उसे भी मै छुपा गया।
लोमोनोसोव का एक एक कोना हम इकट्ठे छाने जा रहे थे।इसके कैम्पस मे चलने वाले सारे बूफेस.इनका स्तोलोवाया.वहाँ के पार्क कल्चरल हाल्स.वहाँ का ऑडिटोरीयम.हॉ इसी ऑडिटोरियम मे मैने अपना डिपलोम डिफेन्ड किया था।पूरा हाल खचाखच भरा हुआ था।यहाँ तक कि आखिरी रो के पीछे काफी लड़के लड़कियाँ भी खड़े थे।अचानक मेरी नज़र आलवीना पर पड़ी।खड़ी तालियाँ बजाये जा रही थी।एक बार मेरा जी धक्क करके रह गया।औपचारिकताओं के खत्म होते ही मै पिछले दरवाजे से भाग निकला।मै आलवीना से दुबारा मिलना ही नही चाहता था।
रास्ते की चहल पहल बढती ही जा रही थी।जे एन यू के तमाम दूसरे हॉस्टल्स के भी लड़के जत्थे बना कर हमारे सामने से गुजर कर हम पर कुछ न कुछ कमेन्टस कर जाते थे।इससे पहले उन्होने शायद किसी भारतीय को एक गोरी लड़की के सन्ग देखा ही नही

था। और तो और जे एन यू के एक अधेड़ प्रोफेसर तो आ कर हमसे ये भी कह गये कि ये हिन्दुस्तान है। आप का यूरोप नही है .जहाँ खुल्लम खुल्ला दिन दहाड़े रंगरेलियाँ मनाई जाती है। अब मै उनसे क्या उलझता!इरीना को क्या समझाता!
उसे दूसरे दिन मिलने का वायदा करके अपर कैम्पस की ओर बढ चला। कईयों ने मेरा वहाँ तक पीछा किया. पर किसी ने मुझसे कुछ कहा नही। सबको पता था कि जिस हॉस्टल मे मै रहता हूँ वहाँ यू पी और बिहार के लड़के रहते हैं। मुझे कुछ हो गया. तो लोअर कैम्पस की ईंट से ईंट बजाने तत्काल आ धमकेंगे।
कमरे मे कवि मेरा इन्तजार कर रहा था। मुझे ये पता नही था कि मेरे इरीना से मिलने की खबर उसे भी मिल चुकी है। बालकोनी मे मेरा बिस्तर कवि नियम से ठीक दस बजे लगा दिया करता था. आज नही लगा था। उसकी असहजता मुझसे छुपी नही थी। पूछने पर बताने लगा कि कैम्पस मे ये बात बिजली की तरह फैल चुकी है कि उसके कमरे मे कोई इलिगल रह रहा है। जब से लोअर कैम्पस मे प्रोफेसर मित्तल का खून उनके अपने ही घर मे हुआ है. तब से जे एन यू का प्रशासन कुछ ज्यादे ही जाग गया है। हो सकता है कि आज रात को उसके कमरे मे छापा पड़ जाये।
ःसारा दोष मुझ पर डाला जायेगा। हॉथ से कमरा तो जायेगा ही. यूनिवर्सिटी से भी निकाला जाऊँगा। फिर कौन सा मुँह लेकर चाचा के सामने जाऊँगा!मेरा सारा सोचा धरा का धरा रह जायेगा। कैम्पस मे सूटिन्ग स्टार बनने से पहले आपको एक बार मेरे बारे मे भी सोच लेना था। कहके कवि सुबकने लगा।
उसे समेट कर मैने गले से लगा लिया। मेरे एक दो कपड़े. जो बाथरूम मे लटके हुए थे. उन्हे समेटा. सूटकेस मे डाला और तत्काल कमरा छोड़ दिया। संयोग से नीचे मुझे एक खाली थ्रीव्हिलर मिल गया। जेएनयू को मैने हमेशा के लिए अल्विदा कहा। जवाहर लाल नेहरू को उनकी अर्न्तराष्ट्रीय आधुनिक यूनिवर्सिटी मुबारक।
कवि मेरे जीवन मे मात्र सतरह दिनो के लिये आया. पर इतने वर्षो के बाद भी मै उसे भूला नही सका। बड़ा ही निश्छल और उदार चरित्र उसके पास था। मुझे अक्सर उसकी याद आती है।
एक तरह से मैने अपने आप को भाग्य भरोसे छोड़ दिया। उसे जो करना है करे. मुझे जहाँ भी ले जाना हो. ले जाये। मदारी के बन्दर की तरह उसके इशारों पर नाचा करूँगा। मेरे हालातों से अब भविष्य मे मेरा भाग्य ही लड़ा करेगा। मुसीबतें भी तो वही लाता है।
रात के बारह बजने को आये थे। हल्की हल्की झिस्सियाँ पड़ रही थीं। एक सस्ते कमरे की तलाश मे मेरा भाग्य अभीं तक भटक रहा था। आस पड़ोस मे शायद ही ऐसी कोई दुकान रही होगी. जिसकी शटर के नीचे आठ दस लोग बोरे या चिथड़े ओढे न सो रहे हों। झिस्सी से बचने के लिए उनके बीच सड़क के अवारा कुत्ते भी जा अंड़से थे। मै थ्रीव्हिलर मे बैठा भगवान से बस यही प्रार्थना किये जा रहा था कि वो मुझे इन शटरों के नीचे रात बिताने को न कहे। जगह जगह पर मेरे थ्रीव्हिलर का ड्राइवर ही गाड़ी रोक कर होटलों मे पूछताछ कर आता था। जिस दिल्ली ने करोंड़ो शरणार्थियों को शरण दिया. उन्हे बसाया. उसी दिल्ली के पास मेरे लिए एक खाली कमरा तक न था। मेरा ड्राइवर मुँह लटकाये वापस आ जाता था। थ्रीव्हिलर का किराया एक सौ तीस रूपये तक जा पहुँचा था। मेरे पास कुल तीन सौ रूपये थे।
जब टेम्पू का मीटर डेढ सौ पर जा पहुँचा. तब उसका ड्राइवर मीटर बन्द करके मुझसे कहने लगा कि उसके बचपन का एक दोस्त किसी एक लॉज मे काम करता है। शायद वहाँ कुछ इन्तजाम हो जाये। मेरे हाँ कहने पर वो मुझे चाँद लॉज मे ले गया।
एक बड़े से हाल मे नही भी तो बीसों बिस्तर लगे पड़े थे। एक भी खाट खाली नही थी। मेरे ड्राइवर का दोस्त रब्बू दोस्ती के नाम पर न जाने कहाँ से एक खाट उठा लाया और हाल के एक कोने मे लगा कर कहने लगाःरात काफी हो चुकी है। आज किसी तरह गुजारा कर ले। सुबह होते ही कोई दूसरा इन्तजाम कर दूँगा।
इस नंगी खाट के सिरहाने तकीये की जगह मैने अपना सूटकेस रखा और उस पर सर रख कर जूता मोजा पहने ही लेट गया।
दूसरे दिन सुबह होते ही रब्बू लाज के इस कोने को साफ सूफ करके एक टूटी आलमारी से इस कोने को घेर दिया। आलमारी चाहे जैसी भी रही हो. पर इसके सॉकल सलामत थे। अब मै इस आलमारी मे अपना सूटकेस रख सकता था। मेरी खाट पर रब्बू एक फटा सा हरे रंग का चारखानेदार चादर डाल गया और जाने से पहले ये कह गया कि थोड़ी देर मे मेहतरानी आयेगी। पखाने गुशलखाने की सफाई के बाद ही उस तरफ का रूख कीजिएगा।
दिल्ली मे ये मेरी दूसरी छत थी जिसका हर रोज का किराया दस रूपया था। सुबह होते ही रब्बू यमराज की तरह हॉथ पसारे सामने आ खड़ा होता था पर मेरी सुविधाओं का पूरा पूरा ख्याल रखता था।
दिल्ली की गर्मी अपना ताम झाम बटोर चुकी थी। बरसात का आगमन हो चुका था। जहाँ पेंड़ पौधे नहा धोकर साफ सूथरे हो चले थे .वहीं पुरानी दिल्ली की सड़कों और गलियों के पनाले तक भर चले थे। जहाँ तक मेरी नज़र जाती थी कीचड़ ही कीचड़ नज़र आता था। घूटने तक पतलून मोड़नी पड़ जाती थी।
अब दिल्ली मे मेरे पास सिर्फ एक काम रह गया था। सुबह तड़के ही मै लॉज छोड़ दिया करता था और दिन भर निरूद्देश्य यहाँ वहाँ भटकता रहता था। भूख लगी तो कुछ खा लिया. थक गया तो कहीं बैठ गया। दिल्ली की बारिशों का ये हाल था कि अच्छी भली धूप निकली हुई है. खुला आसमान है कि अचानक न जाने कहाँ के बादल आकर पूरे आसमान मे छा जाते थे. जोरों की हवायें चलने लगती थी फिर झम्म से बरसात होने लगती थी। ये सब कुछ इतनी जल्दी हो जाता था कि इन्सान अपना छाता तक नही खोल पाता था। मुझे इसकी भी कोई खास परवाह नही रहती थी। पास मे कोई दुकान मिल गई तो अन्दर चला गया. वरना भींगता रहता था। अमूमन बरसात के बन्द होते ही फिर से धूप निकल आती थी। कपड़े भी जल्दी ही सूख जाते थे।
एक दिन मेरी मुलाकात इरीना से कनाट प्लेस मे हुई। बस से उतर कर वो तेज कदमों से कस्तूरबा मार्ग पर बढी ही थी कि उसकी नजर मुझ पर जा पड़ी। लपकती मेरे पास आई
ःकहाँ रहे इतने दिन!मुझसे मिलने क्यों नही आये!मै हर शाम तुम्हारा इन्तजार करती रही। यहाँ क्यों बैठे हो!किसी का इन्तजार कर

रहे हो!सवालों की उसने झड़ी सी लगा दी।
ःमुझे वक्त ही न मिला तुमसे मिलने का।इसके आगे मुझसे कुछ कहा ही नही गया।अचानक मेरी आवाज भर्राने को आई थी।ये इरीना से छुपा नही रहा।अपने हॉथों मे मेरा हॉथ ले लियाःकिसी परेशानी मे हो!मुझे बताओ न।तुम एक काम करो।मेरे संग सोवियत हाऊस चलो।वहॉ एक रेस्त्रॉ हैं।वहीं बैठ कर आराम से बाते करेंगे।
ःपर मेरे कपड़े!
ःकपड़ों को क्या हुआ है!थोड़े भींग गये हैं।सूख जायेंगे।
इरीना से इस मुलाकात के बाद शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा.जब हम एक दूसरे से न मिले हों।वो रोजाना सोवियत हाऊस मे रसियन की क्लासें भी लिया करती थी।अपनी ही क्लास मे मेरा एडमिशन करवा कर उसने मेरे लिए सोवियत हाऊस का पास भी बनवा दिया था।अब मै वहॉ बिना किसी रोक टोक के जा सकता था।वहॉ की लाइब्रेरी से किताबें ले सकता था।वहॉ के फन्कशनों मे भाग ले सकता था।वहॉ के रेस्त्रॉ मे बैठ सकता था।
इरीना की क्लासें तीन बजे खत्म हो जाती थीं।फिर उसके पास समय ही समय हुआ करता था।अगर मौसम ठीक रहा.तब हम बाहर निकल जाते थे.वरना रेस्त्रॉ मे ही बैठे रहते थे।बड़ा कहने सुनने पर वो रात के ग्यारह बजे जे एन यू की बस ले लिया करती थी।
शुरू के दिनो मे हमारे बातचीत का मूख्य विषय मास्को ही हुआ करता था।जब तब मै उसे उन दूसरे शहरों के बारे मे भी बताया करता था.जहॉ मै अपने प्रैक्टिकलों के सिलसिले मे गया हुआ था।कभीं कभीं हम सोवियत यूनियन की साम्यवादी व्यवस्था पर भी बातें किया करते थे।समय के साथ मै उसे अपने बारे मे सब कुछ बताने लगा था।इसी बहाने मेरे मन की गुत्थियॉ भी सूलझती चली जा रही थीं।एक अजीब सा धैर्य इरीना के पास था।पुरगौर मुझे सुना करती थी।
उसके पूछे कई प्रश्न अभीं भी इस वजह से अनुत्तरित थे.क्योंकि आलवीना के बारे मे मै उसे कुछ बताना नही चाहता था।मास्को का तीन वर्षीय वीजा और लोमोनोसोव मे डाक्टरेट के ऑफर के बावजूद मेरे वर्त्तमान और भविष्य की विकरालता उससे छुपी नही रह गई थी।मुझे मिले छ सौ रूपये का आधा तो रब्बू हॅथिया लिया करता था।बचते थे तीन सौ रूपये.जिन्हे मुझे बड़ा सम्हाल कर खर्च करना पड़ता था।फिर मेरा झगड़ा मिनिस्ट्री के लोगों से भी था।कान्ट्रैक्ट के हिंसाब से उन्हे मेरे लिए नौकरी ढूँढनी थी और वो बस मुझे टाले चले जा रहे थे।महीने के आरम्भ मे छ सौ रूपल्ली थमा दिया करते थे।होटलों मे रोटियॉ भी गिन गिन के खानी पड़ती थीं।इन बातों के बावजूद दिल्ली मे मेरा जीवन लाखों करोड़ों लोगों से बेहतर था।
जब पहली बार इरीना ने मुझे सोवियत हाऊस के मिन्स्क रेस्त्रॉ मे आमंत्रित किया था.तब मैने उसे साफ साफ बताया था कि हमारी मित्रता मे इस तरह के रेस्त्राओं या कैफेस वगैरह की कोई गुंजायश नही है।उनके बिल्स वगैरह मै नही भर सकता।
ःअगर उनके बिल्स तुम भरोगी.तो देखने वाले यही कहेगे न कि मै किसी मालदार को फॉसे बैठा हूँ।हमारी अपनी राय अपने ही बारे मे बेहद गन्दी हो चली है इरीना।इसके अलावे मै अपने आप को बड़ा हीन महसूस करूँगा।
ठिठक कर रह गई थी इरीनाःठीक है प्रमोद!चलो फिर कहीं घूमने चलते हैं।
अब इरीना अपने खुद के बनाये सैन्डवीचेस साथ लाने लगी थी।उसे अपनी इम्बेसी मे चलते स्टोर से तरह तरह के सौसेजेस मिल जाते थे।साथ मे वो एक थर्मस भी रखने लगी थी।जब वो एक ग्लास मे कॉफी भर कर मुझे पीने को देती थी.तब मुझसे मना नही किया जाता था।उसके सैन्डवीच भी मुझे पकड़ने पड़ते थे।ऐसे क्षणों मे मुझे आलवीना की बड़ी याद आती थी।कभीं कभीं तो ऐसा लगता था.जैसे वो इरीना के रूप मे मेरे साथ बैठी हो।
वीकएन्ड मे हम मास्को के पार्कों मे घूमने जाया करते थे।चलते चलते जब हम थक जाते थे.तो पास की किसी बेंच पर जा बैठते थे।फिर आलवीना अपना रूकजाक खोल कर थर्मस बाहर निकालती थी।साथ मे वो सैन्डवीचें भी रखती थी।एकाध सेब या चाक्लेट तो हमेशा ही उसके रूकजाक मे पड़े होते थे।
पूछने भर की देर होती थीःआला!कुछ खाने को है!
ःहॉ हॉ क्यों नही।सब कुछ है या फिर कहीं चल कर पिल्मिनी खाने का मन है!
ःनही नही।तुम्हारे पास जो है.उसी मे से कुछ दे दो।
फिर वो अपना रूकजाक खोल कर मेरे पीछे ही पड़ जाती थी।
जैसे किसी एक अपराधी के घेरों को तंग करते हुए उसे एक ऐसे सॅकरें घेरे मे लाया जाता है.जिसमे अपने अपराध की हामी भरने के अलावे उसके पास कोई दूसरा विकल्प नही रह जाता है.ठीक वही इरीना मेरे संग कर रही थी।मास्को मे मेरे तमाम बिखरे मोतियों से वो जो माला गूँथ रही थी.उसका हर तरह से एक ही नाम थाःआलवीना.जिसे उगलवाने का प्रयास निरन्तर इरीना किया करती थी।आलवीना का नाम आते ही मै बातों का प्रसंग बदल दिया करता था.पर ये सिलसिला भी उतना लम्बा न चल पाया।एक बार मुझे उसका नाम लेना ही पड़ गया।आलवीना का नाम सुनते ही वो चौंकी
ःफिर तो मै तुम्हे लोमोनोसोव से ही जानती हूँ
ःमुझे!मुझे तुम वहॉ कब और कहॉ मिली हो!
ःतुमसे मै मिली तो नही हूँ.पर तुम्हे और आलवीना को कई बार दूर से देखा जरूर है।दरअसल मुझे तो तुम्हे देखते ही पहचान लेना था।काफी बदलाव आ गया है तुममे.पर लम्बे डग भर कर तुम आज भी चला करते हो।पता नही क्यों!इस बात पर मेरा ध्यान एकबार भी नही गया।तुम्हारे और आलवीना मे अक्सर इस बात को लेकर नोकझोक हुआ करती थी कि तुम्हारे मान्टेल के सारे बटन बन्द रहें ताकि तुम्हे सर्दी जुकाम न हो जाये और तुम्हे उन बटनो का खुला रहना पसन्द था।कई बार मैने तुमदोनो की ये नोकझोक सुनी है।स्तोलोवाया मे आलवीना ही लाइन मे लग कर तुम्हारे लिए खाना लाया करती थी।तुम हमेशा अपनी पैस्ट्री उसके प्लेट मे डाल दिया करते थे।तुम्हे याद है ये सब!

मै लगभग भाषाविहीन हो चला था
ःएक बार मैने तुमदोनो को मेट्रो मे भी देखा है।बैठने की एक भी सीट खाली नही थी।अचानक एक सीट खाली हुई.जिसे झपट कर आलवीना छेंकी और तुम्हे आवाज लगाई।तुम खड़े ही रहना चाहते थे.पर आलवीना जर्वदस्ती तुम्हे उस सीट पर बिठाई थी।
ःतुम आलवीना को जानती हो क्या!
ःजानती तो नही हूॅ.पर हमारे हॉस्टल मे अक्सर उसके खूबसूरती की चर्चा होती है।अगर हमारे यहॉ मिस लोमोनोसोव की प्रतियोगिता होती.तो सारे जूरी उसके ही पक्ष मे जाते।उसके बारे मे कुछ बताओ न!
ःक्या जानना चाहती हो उसके बारे मे!कुछ महीनो के बाद तुम वापस जा रही हो।उससे खुद ही मिल लेना.पर उसे मेरे बारे मे कुछ नही बताना।
ःठीक है।नही बताऊॅगी.पर एक बात तो बताओ प्रमोद!
ःपूछो
ःतुम मास्को वापस क्यों नही चल सकते!
ःइसलिये कि मै वहॉ रह नही सकता।आलवीना से दूर सूदूर किसी तरह भले ही रह लूॅ।मेरे जीवन के तमाम सुखद क्षण आलवीना के ही दिये हुए हैं।तुम मुझमे जो सौन्दर्यबोध देखती हो.ये भी उसी का दिया हुआ है।कई बार कोशिश की आलवीना की तरफ लौटने की.पर लौट नही पाया और शायद कभीं भी लौट नही पाऊॅगा।मेरे जीवन के पिछले सुनहरे आठ वर्ष एक साथ लोप हो गये।मेरे वो तमाम सम्बन्ध भी खो गये जो इस दरम्यान बने थे।अपने जीवन मे इन आठ वर्षो का आया अन्तराल मै कभीं नही भर पाऊॅगा जिसकी सिर्फ एक वजह है कि मै आलवीना को कभीं भूला नही पाऊॅगा।
ःउसका दोष क्या था प्रमोद!
ःउसका कोई दोष नही था।
ःउससे कोई गलती हो गई थी!
ःये मै तुम्हे नही बता सकता।फिर ये उचित भी नही है।
रात के डेढ बजने को आये थे।मेरे दोस्त के कई मेहमान वापस जा चुके थे.पर अभी भी उसके घर पर काफी चहल पहल थी।रह रह कर उसकी पत्नी मेरे खाली प्लेट मे पूछ कर कुछ न कुछ डाल जाती थी।इरीना न जाने कब का खाने की मेज से उठ चुकी थी।सामने कामीन वाले कमरे मे वो अपनी सहेलियों के संग बैठी गप्पे मारे जा रही थी।जब तब उसका पति पीछे सा जा कर उसके गले मे अपनी बॉहे डाल दिया करता था।इरीना अपनी उॅगलियों की कन्घी से उसके बाल पीछे की ओर फेरने लगती थी।
मेरे पास पड़ी कूर्सियों पर कब कौन आ कर बैठा और गया.मुझे पता ही नही चला।
एक बार दिल्ली मे अचानक मुझे बड़े जोरों का बुखार आ गया।रब्बू भागा अपने मालिक कूदूस जी को पकड़ लाया और वो पलक झपकते अपने एक हकीम साथी को।कुछ फाइलेरियल बुखार जैसा था।एक सप्ताह तक मुझे बिस्तर से उठने ही नही दिया।रब्बू ही पकड़ कर टवायलेट वगैरह ले जाता था।कूदूस साहब हर रोज अपने हकीम साथी के साथ मुझसे मिलने आते थे और साथ मे एकाध सन्तरा या केला लाना नही भूलते थे।
इरीना के बार बार पूछने पर एक बार मैने उससे चॉद लॉज का जिक्र भर किया था.उसे ले कर वहॉ मै कभीं गया नही था।तीसरे दिन न जाने कैसे पता लगा कर इरीना मुझसे मिलने लॉज मे आईशाम के यही कोई पॉच साढे पॉच बज रहे होंगे।रब्बू मेरे बदन पर एक कम्बल डाल गया था।मै करवट लिए सो रहा था।बार बार किसी के जगाने पर जब ऑखें खोला तो देखा सामने इरीना झुकी खड़ी है।हड़बड़ा कर उठ बैठा।बड़े प्यार से इरीना ने मेरा हॉथ थाम लिया।उससे एक शब्द भी नही कहा गया।अनायास रोने लग पड़ी।
ःतुम्हे कहॉ लेकर जाऊॅ मै!अपने हॉस्टल मे तुम्हे रख नही सकती.किसी अच्छे होटल मे तुम्हारे साथ रह नही सकती।मास्को तुम वापस लौटना नही चाहते।समझ मे नही आता कि मै तुम्हारे लिये क्या करूॅ!पैसे भी तो तुम मुझसे नही लेना चाहते!अपनी कॉपती आवाज मे वो बस इतना ही कुछ कह पाई।
रात के नौ बजे तक मेरा हॉथ थामे बैठी रही।न जाने कहॉ से रब्बू उसके लिए बिन बॉहों की एक कुर्सी उठा लाया था।
आलवीना से मेरा परिचय हो चुका था.पर अभीं तक मै उसके घर नही गया था और न वो मेरे कमरे मे ही आई थी।हॉ यूनिवर्सिटी मे उससे रोज ही मेरी मुलाकातें होती थीं।उसने मुझे अपने जन्मदिन पर बुला रखा था।भेंट के तौर पर वो मुझसे सोफीया राटार के गानों का एक डिस्क चाहती थी।वही खरीदने शहर गया हुआ था कि अचानक सारा बदन कॉपने लगा और देखते ही देखते मुझे बड़ी तेजी का बुखार आ गया।किसी तरह अपने फ्लोर का नम्बर डायल करना चाहा.पर वो बार बार एन्गेज्ड निकला।न चाहते हुए भी मुझे आलवीना को फोन करना पड़ गया।अविलम्ब वो एक टेक्सी लेकर आई और मुझे अपने घर लिवा गई।उसके नानी वाले कमरे मे पहले से ही मेरा बिस्तर लगा दिया गया था।ठीक होने मे मुझे दो सप्ताह लग गये।एक पल के लिए भी उसने मेरा कमरा नही छोड़ा।मेरे कमरे मे लगे सोफे पर ही वो सो जाया करती थी।उसने यूनिवर्सिटी जाना भी बन्द कर रखा था।जब भी मेरी ऑखें खुलती थी.लपकते पास आती थी।
रब्बू की दी गई बिन बिस्तर की खटिया यकायक एक आरामदेह बिस्तर मे जा बदली।करवट बदल कर मै गई रात तक आलवीना के सानिध्य मे खोया रहा।उसे फिलॉलोजी की पढाई छोड़ कर नर्स बन जाना था।उसके स्पर्श मात्र से हर बिमारी को भाग जाना था।
इरीना के वापस लौटने के दिन नजदीक आते चले जा रहे थे.जिसका मै इन्तजार भी कर रहा था।उसका सन्सर्ग एक सपना ही तो था.एक पलायन था मेरे लिये।मुझे एक न एक दिन अपने आप को बटोरना था।अपने देवदासत्व को विदा कहके कर्मभूमि पर

दुवारा वापस लौटना था।
आलवीना से मै बेहद आवद्ध था।एक बार भी मेरा ध्यान भटक कर इरीना की तरफ नही गया।मै उसमे मात्र अपना पलायन ढूँढ रहा था।उसमे आलवीना का विकल्प नही।आलवीना का विकल्प न तो उन दिनो कोई था और न आज कोई है।
इरीना के कहने पर मै उसके साथ तीन दिनों के लिए परवानू गया हुआ था।इसके पहले कि परवानू मे किसी भी तरह की सीमा टूटती,मुझे उसे साफ साफ कहना पड़ गया था कि मै उसे आलवीना की जगह नही दे सकता और वो अपनी सतही प्रयासों से मुझे बरी रखे।वो क्यों मेरी नज़रों मे गिरना और मुझे गिराना चाहती है!
इरीना बेहद संवेदनशील थी।उसे मेरा कहा जा लगा।उसी शाम हम वापस दिल्ली लौट आये।इसके बाद वो दिल्ली मे और ग्यारह दिन रही,पर मुझसे मिलने नही आई।मै नियम से सोवियत हाऊस की लाइब्रेरी मे पहुॅच कर उसका इन्तजार करता रहता था।न जाने क्यों वो इस बात से इस कदर आहत हो गई थी कि मेरे जीवन मे आलवीना का कोई पर्याय है ही नही।क्या वो मेरा सब कुछ कहा ढंग से सुना नही करती थी!मेरे जीवन मे आलवीना की अहमियत का उसे लेशमात्र भी ख्याल नही था।
इरीना को मै लगभग विदा कह चुका था,फिर भी उसकी यादें मेरे आस पास ही बिखरी पड़ी मिलती थीं।पिछले नौ महीनों मे शायद ही कोई दिन रहा होगा,जब हम एक दूसरे से न मिले हों।मेरे जीवन मे जिस तेजी से ये परिचय पनपा,दूसरा कोई नही।न जाने इरीना जैसे लोग एक अपरिचय को देखते ही देखते एक प्रगाढ परिचय मे कैसे बदल लेते हैं!दो मनो के बीच की राह को पलक झपकते इतनी छोटी कैसे कर लेते हैं! मै अपने जीवन का हर तिरस्कार उसकी आड़ मे लगभग भूल चुका था।दिल्ली मे हर आने वाली सुबह मुझे बड़ी मनोरम लगने लगी थी।
आज दिल्ली मे उसका आखिरी दिन था।मै लाइब्रेरी मे बैठा यूँही एक पुराना प्रावदा पढ रहा था कि अचानक पीठ पीछे किसी ने हल्के से मेरे कन्धे पर हॉथ रखा।पलट कर देखा तो इरीना खड़ी थी
ःचलो अच्छा हुआ,जाने से पहले मिलने तो आई।मै तो सारी उम्मीदें खो चुका था।
मेरी बातों को अनसुना करके वो मुझे इशारे से ही उठने को कही।हम इकट्ठे लान्ज मे आये।कोने मे एक खाली सोफा पड़ा था।हम उस पर जा बैठे।
कई मिनटों तक हमारे बीच एक चूप्पी छाई रही।इरीना न जाने क्या सोचे जा रही थी और मुझे भी बातचीत का प्रारम्भ नही मिल पा रहा था।
मौन तोड़ते हुए मैने ही पहल कीःसारी तैयारियॉ हो गई है!इशारे से ही उसने हॉ कहा।
ःये पिछले नौ महीने देखते ही देखते बीतने को आये।समय का पता ही नही चला।सुबह कितने बजे की फ्लाईट है।मास्को पहुॅचते ही मास्को और लोमोनोसोव को मेरा प्रिवयत कहना।तुम मुझसे नाराज तो नही हो!
मै इन बातों से बस इरीना की चूप्पी ही तोड़ना चाहता था कि अचानक उसके ओंठ कॉपने लगे।उसकी हरी ऑखों मे जैसे ऑसुओं का सोता ही फूटने को आया था।जाने से पहले वो मुझे एक रैप्ड प्रैजेन्ट पकड़ा गई थी,जिसे मैने लॉज मे वापस आकर अपने सूटकेस मे रख दिया।
उसने मुझसे एयरपोर्ट पर आने के लिए पूछा था।मैने उसे साफ साफ मना कर दिया थाःविदाईयों से मै बचपन से ही घबराता रहा हूँ।मुझे वहॉ मत बुलाओ।
ःमै अपने संग तुम्हारी यादें कैद किये साथ ले जा रही हूँ।लोमोनोसोव के परिशर मे तुम मुझे बेहद याद आओगे,कहके उसने मेरी पेशानी चूमी और तेज कदमों से सोवियत हाऊस छोड़ दिया।
सारी रात मुझसे सोया नही गया।न चाहते हुए भी दूसरे दिन सुबह तड़के मैने एक थ्रीव्हिलर ली और बुद्धाजयन्तीपार्क आया।सुबह के पॉच भी नही बजे होंगे।इर्द गिर्द एक घना सा कोहरा छाया हुआ था।सड़क की बत्तियॉ तक ऊॅघ रही थी।मै रास्ते के किनारे पड़ी एक चट्टान पर जा बैठा।सामने अजगर की तरह लेटी एक काली चिकनी सड़क पसरी हुई थी।जब तब सामने से सॉय सॉय करती थ्रीव्हिलर या मोटरें गुजर जाती थीं।मै इरीना की यादों मे खो चला था।उसे मैने अपने बारे मे क्या क्या नही बताया!मेरे मन की गॉठ,जो दिन ब दिन कसती चली जा रही थी,खुलने को आई थी।अगर वो नही होती,तो मै कब का अपनी ही घुटन मे दब कर रह गया होता।मुझे अक्सर ऐसा लगता था,जैसे मेरा कुछ भी कहा उसके लिए बेमानी नही है।पुरगौर अपना सुना जाना मुझे कितना भला लगने लगा था।अपने कहे मे मै अपनी मनःस्थितियॉ,अपनी विवशतायें और अपनी गलतियॉ ही तो ढूंढा करता था।एक कन्फेशसन सा था सब कुछ।
पौ फटने को आया था।दूर से मुझे एक काली चायका आती दिखी।मै हड़बड़ा कर उठा और सड़क के किनारे आ गया।कुछ सेकेन्डो की ही बात रही होगी।इरीना का हल्का सा चेहरा भर दिखा था।हॉथ उठाने का भी समय नही मिला मुझे।
मै पैदल ही अपने लॉज की ओर बढ चला।सारा हॉल खाली पड़ा था।सूटकेस खोल कर इरीना का प्रेजेन्ट बाहर निकाला।खोलने से पहले रैप पेपर पर हल्की सी नज़र डाली।हल्के नीले पेपर पर तीन सारस अपनी गर्दन लम्बी किये उड़े जा रहे थे।सम्हाल कर प्रेजेन्ट खोलने लगा कि भरभरा कर न जानें कितने कार्डस जमीन पर जा गिरे।एक कार्ड को उठा कर देखा।इस पर भी रैप पेपर जैंस ही सारस बने थे और दूसरी तरफ इरीना के सूनहरे रसियन अक्षर थे।बिना पढे मैने सारे कार्ड बटोरे और उन्हे क्रमवार सजाने लग पड़ा।कूल तीन सौ इकहत्तर कार्ड थे और साथ मे इरीना का एक पत्र भी थाः
दरोगोई प्रमोद
प्रिवयत
तुम कहॉ और कैसे हो,ये जानने की उत्सुकता मेरे मन मे सदा बनी रहेगी।यहॉ मै अपने सारे पते तुम्हे लिख दे रही हूँ।मुझे अपने बारे मे बताते रहना।

जब मै तुमसे पहली बार मिली और तुम मुझे लोमोनोसोव के बारे मे बताने लगे. तो मुझे ऐसा लगा कि तुम अपने आप को एक पल के लिए भी हमारे देश मे परदेशी महसूस नही किये। तुम वहॉ आठ वर्ष रहे। अकेले आये. लोगों से मिले. उनके सुख दुख मे शामिल हुए उनका एकाकीपन बॉटा. उनके संग रोये और हॅसे। मास्को को तुमने अपना प्यार और मान दिया। इसे वो लोग तो जानते ही हैं .जो तुम्हे जान पाये. पर वो नही. जो तुमसे मिल नही पाये। उन्हे भी ये जानने का पूरा हक़ है। यही वजह है कि मै तुम्हारे कहे एक एक शब्द इन कार्डो मे कैद करती रही. जिन्हे मै तुम्हे सौंपे जा रही हॅू। मै तुम्हे अन्त तक नही सुन पाई. परन्तु तुम मुझे सम्बोधित करके अपने बारे मे निरन्तर बताते रहना। जिस दिन तुम्हारे पास मुझसे कहने के लिए कुछ भी शेष नही बचेगा. तो ये समझ लेना कि तुम्हारा उपन्यास पूरा हो गया है। फिर उसे छपवाना और उसकी एक प्र्ति मुझे भेजना। ये मेरी तुमसे आखिरी विनती है। परवानू मे तुमने मुझे गलत समझा पर मै तुमसे नाराज नही हॅू। आग के जले मरीज़ किसी भी तरह के स्पर्श से डरते हैं। तुम्हारे जीवन मे आलवीना का पर्याय नही है. ये मुझे अच्छी तरह पता चल चुका था। फिर ये दुस्साहस भला मै क्यों करती!मेरी दूसरी विनती तुमसे ये है कि तुम आलवीना को माफ कर दो. चाहे उससे जो भी गलती हुई हो। जरा अपने मन को टटोलना तो सही। हम अपनी कुछ क्षमाओं मे अपनी पराजय देखते हैं पर सच तो ये है कि वहीं हमारी जीत छुपी रहती है।

इरीना की पहली विनती मै एक पल के लिए भी नही भूला। सच तो ये है कि मै उसे भी एक पल के लिए नही भूला।

साम्यवादी सोवियत यूनियन पर आधारित मेरे सिर्फ आठ वर्ष नामके उपन्यास के एक सौ बहत्तरवें पन्ने तक मै पहुॅच चुका हॅू। ये उपन्यास एक आपबीती है और इरीना को ही सम्बोधित करके लिखी हुई है। इसका समर्पण भी मै उसे ही दॅूगा। इस उपन्यास का एक तरह से मै ही अनुभावक हॅू लेखक हॅू और उसका आलोचक भी हॅू पर इरीना के दिये तीन सौ इकहत्तर कार्डो के बगैर इस उपन्यास का जन्म सम्भव न हो पाता। मै जब भी जहॉ भी अॅटका और हकलाया. उसे ही याद किया। यही वजह है कि मै उसे अपनी यादों मे सहलेखिका के नाम से सम्बोधित करता रहा। मुझे कई बार इस उपन्यास के अनगिनत लिखे पन्ने डिलिट करने पड़ गये। आलवीना को सजा देने का मुझे कोई हक नही है. पर उसे माफ करना भी मेरे वश का नही है। इरीना की दूसरी विनती मुझसे पूरी नही की जा सकेगी।

जिस दिन ये उपन्यास पूरा हो जायेगा. उसे मै छपवाऊॅगा. भले ही उसे छपवाने मे मुझे अपने पैसे ही क्यों न खर्च करने पड़ जायें। फिर उसकी पहली प्र्ति लेकर मै खुद इरीना को देने जाऊॅगा। हल्के नीले रंग की बाइन्डिन्ग पर तीन गर्दन ताने उड़ते सारस और डूबते उभरते अक्षरों मे **ःमेरे सिर्फ आठ वर्षः**

पास ही तो रहती है इरीनाःःःः

11।12।2011 प्र्मोद कुमार सिंह